26 / 04 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्वतन्त्रता ब्राह्मणों का जन्म-सिद्ध अधिकार

➢➢ स्वतंत्र होने का अनुभव..

➳ _ ➳ मैं आत्मा पंछी देह के पिंजरे में कैद होकर आसमान की तरफ निहार रही हूँ...

→ मीठे बाबा मुस्कुराते हुए मुझे ऊपर वतन में बुला रहे हैं...

■ "मीठे बच्चे... आ जाओ मेरे पास..."

➳ _ ➳ मैं आत्मा ऊपर उड़ने की कोशिश करती हूँ...

→ पर ये देह का बंधन मुझे नीचे खींच रहा है...

→ पुराने स्वभाव-संस्कार मुझे ऊपर उड़ने नहीं दे रहे हैं...

→ प्रकृति के विभिन्न आकर्षण मुझे अपनी ओर खींच रहे हैं...

→ विकारों के वशीभूत होकर जरा भी उड़ नहीं पा रही हूँ...

■ इन बन्धनों में बंधकर मैं आत्मा परेशान हो रही हूँ...

■ दैहिक सुखों के रस में पड़कर नीरसता का अनुभव हो रहा है..

■ दुखी होकर तड़प रही हूँ...

▶ बाबा को पुकारती हूँ- "प्यारे बाबा... मुझे लिबरेट करो..."

➳ _ ➳ मीठे बाबा अपनी सर्व शक्तियों की किरणें मुझ पर बरसाते हैं...

→ ऊपर वतन से सर्व शक्तियों की किरणें मुझ पर बरस रही हैं...

→ एक-एक किरण पिंजरे के जंजीरों को भस्म कर रही है...

■ मैं आत्मा इस विनाशी देह के बंधन से मुक्त हो रही हूँ...

■ विकारों के मायाजाल से बाहर निकल रही हूँ...

■ प्रकृति के सभी प्रलोभन भस्म हो रहे हैं...

■ मेरे सभी स्थूल और सूक्ष्म बंधन समाप्त हो रहे हैं...

▶ मैं आत्मा सभी बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र अनुभव कर रही हूँ...

▶ स्वतंत्र होकर बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूँ...

▶ और ऊपर उडकर मीठे बाबा के पास पहुँच जाती हूँ...

➳ _ ➳ प्यारे बाबा मुझे अपनी गोद में लेकर अपने प्यार की किरणों से सराबोर कर रहे हैं...

→ मैं आत्मा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रही हूँ...

→ एक बाबा के प्यार की अनुभूति में खो रही हूँ...

→ बाबा मेरी झोली में खुशियाँ ही खुशियाँ भर रहे हैं...

→ मीठे बाबा अपने प्रेम और आनंद की किरणों से मुझे भरपूर कर रहे हैं...

➳ _ ➳ सभी देह के बंधन और मोह के बन्धनों से मुक्त होकर मैं आत्मा उड़ता पंछी बन गई हूँ...

→ अब मैं आत्मा किसी भी बात में परतंत्र नहीं हूँ...

→ अब मुझे कोई भी अपने बंधन में नहीं बाँध सकता है...

- मैं आत्मा सदा स्मृति में रखती हूँ की ये देह और देह के सम्बन्ध अविनाशी हैं...
- अब मुझे इनके वश नहीं होना है...
- और अब मुझे पिंजरे का पंछी नहीं बनना है...

➳ _ ➳ स्वतन्त्रता मुझ ब्राह्मण आत्मा का जन्म-सिद्ध अधिकार है...

→ अब मैं आत्मा सदा मास्टर सर्व शक्तिवान की श्रेष्ठ स्टेज पर स्थित रहती हूँ...

→ अब मैं माया के अधीन होकर किसी भी बंधन में नहीं आती हूँ...

→ अब मैं आत्मा प्रकृतिजीत, मायाजीत और विकर्माजीत बन गई हूँ...

→ मैं आत्मा ऑलमाईटी अथॉरिटी के हर डायरेक्शन का पालन कर रही हूँ...

- व्यर्थ संकल्पों को एक सेकेण्ड में स्टॉप कर रही हूँ...
- सेकेण्ड में मास्टर शक्ति का सागर बन विश्व को शक्ति का महादान दे रही हूँ...
- मास्टर सर्वशक्तिवान बन विश्व का कल्याण कर रही हूँ...
- अब मैं आत्मा सदा अपनी स्टेज पर स्थित होकर एवररेडी रहती हूँ...